ICSSR sponsored Two-days National Seminar

on

‘Basic Indian Social Institutions Continuity and Change’
(19-20 March 2024)

उद्घाटन सत्र
(प्रथम दिवस) : 19.03.2024

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से ‘बेसिक इंडियन सोशल इंस्टीट्यूशन: कंटीन्यूटी एंड चेंज’ विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का आयोजन दिनांक 19 मार्च 2024 को हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजेश मिश्रा एवं मुख्य वक्ता भारतीय समाजशास्त्र परिषद् की महासचिव प्रो. श्वेता प्रसाद रहीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. पूनम टण्डन ने कहा कि समाजशास्त्र एक लोकप्रिय विषय है, जिसके विद्यार्थियों में बड़ी संभावनाएँ हैं। समाजशास्त्र विषय ऑनलाइन कोर्सेज में भी बहुत लोकप्रिय है। भारतीय सामाजिक संस्थाओं में हो रहे परिवर्तन पर केंद्रित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का सार्थक निष्कर्ष निकलेगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. राजेश मिश्रा ने कहा कि किसी भी राष्ट्र का चरित्र मध्य वर्ग की विशेषताओं से जाना जा सकता है। मध्य वर्ग को केंद्रित करके अध्ययन होगा तो समाज में परिवर्तन समझ में आएगा। भारत में परंपरा और आधुनिकता का अंतरसंबंध है, यहाँ न केवल परंपराओं का आधुनिकीकरण हो रहा और बल्कि आधुनिकता का भी परम्परागतकरण हुआ है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि भारत की डेमोक्रेसी को जाति ने मजबूत किया है। जाति एक दबाव समूह के रूप में नीतियों को प्रभावित करती है। भारत में जाति एक सामुदायिक विशेषता के रूप में अपने कदम जमाए हुए हैं।

मुख्य वक्ता भारतीय समाजशास्त्र परिषद् की महासचिव प्रो. श्वेता प्रसाद ने आधारभूत भारतीय सामाजिक संस्थाओं की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाओं का रेखांकन करते हुए परिवार, जाति, विवाह, धर्म जैसी संस्थाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में अतिथियों का परिचय तथा स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग द्विवेदी ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक तथा आयोजन सचिव प्रो. सुभी धुसिया ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि सामाजिक संस्थाएँ किसी भी समाज की पहचान है और समाज के स्थायित्व का आधार हैं। भारतीय सामाजिक संस्थाएँ अपनी मौलिकता की वजह से वैश्विक स्तर पर विशिष्ट रखती है। परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया है, इस संदर्भ से भारतीय सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन भी बहुआयामी स्वरूप लिए हुए है।

कार्यक्रम का संचालन दीपेन्द्र मोहन सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. पवन कुमार ने किया।

विशेष

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिन आयोजित कुल 04 तकनीकी सत्रों में 80 से अधिक प्रतिभागियों ने आधारभूत सामाजिक संस्थाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया। साथ ही राष्ट्रीय संगोष्ठी में सिंपोजियम सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. प्रमोद गुप्ता, राजस्थान से डॉ. अरविंद महाला, समाजसेवी मुमताज खान उपस्थित रहे। सिंपोजियम सत्र की अध्यक्षता इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. चंद्रभूषण गुप्ता अंकुर ने किया।

ारत की डेमोक्रेसी को जाति ने किया मजबूत

(एसएनबी)। किसी भी राष्ट्र का चरित्र मध्य वर्ग की विशेषताओं से जाना जा
मध्य वर्ग को केंद्रित करके अध्ययन होगा तो समाज में परिवर्तन समझ में आएगा।
मोक्रेसी को जाति ने मजबूत किया है। जाति एक दवाव समूह के रूप में नीतियों को
रती है। भारत में जाति एक सामुदायिक
रूप में अपने कदम जमाए हुए हैं।
वातें प्रो. राजेश मिश्रा पूर्व अध्यक्ष
विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने
मंगलवार को दीनदयाल उपाध्याय
श्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग
डियन सोशल इंस्टीट्यूशनः कंटीन्यूटी एंड चेंज विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
सत्र को वतौर मुख्य अतिथि संवोधित कर रहे थे। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता
लपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि समाजशास्त्र एक लोकप्रिय विपय है, जिसके विद्यार्थियों

माजशास्त्र विभाग में दो य राष्ट्रीय संगोष्ठी का टन

गोष्ठी के बेहतर निष्कर्ष ी : कुलपति

गोरखपुर विवि. सवांद भवन में समाज शास्त्र विभाग के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम में स्मारिका का विमोचन करती कुलपति प्रो. पूनम टंडन ,मुख्यअतिथि प्रो. राजेश मिश्रा,प्रो. श्वेता पसाद, प्रो, अनूराग द्विवेदी ,प्रो, सुभी धुसिया व अन्य।

में वड़ी संभावनाएं हैं। इस संगोष्ठी के वेहतर परिणाम निमलेंगे। मुख्य वक्ता भारतीय समाजशास्त्र परिपद् की महासचिव प्रो. श्वेता प्रसाद ने आधारभूत भारतीय सामाजिक संस्थाओं की वर्तमान स्थिति एवं भविप्य की संभावनाओं का रेखांकन करते हुए परिवार, जाति, विवाह, धर्म जैसी संस्थाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग द्विवेदी ने किया। राप्ट्रीय संगोप्ठी की संयोजक तथा आयोजन सचिव प्रो. सुभी धुसिया ने विपय प्रवर्तन करते हुए कहा कि भारतीय सामाजिक संस्थाएं अपनी मौलिकता की वजह से वैश्विक स्तर पर विशिप्ट रखती है। कार्यक्रम का संचालन दीपेन्द्र मोहन सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. पवन कुमार ने किया। इस अवसर पर अधिप्ठाता कला संकाय प्रो. कीर्ति पांडेय, प्रो. संगीता पांडेय, डा. मनीप कुमार पांडेय, प्रकाश प्रियदर्शी सहित भारत के आधा दर्जन से अधिक राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालय महाविद्यालयों से शिक्षक, शोधार्थी तथा वड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

चार सत्रों में 80 से अधिक प्रतिभागियों ने किया प्रस्तुतीकरण : दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिन आयोजित कुल 04 तकनीकी सत्रों में 80 से अधिक प्रतिभागियों ने आधारभूत सामाजिक संस्थाओं से संवंधित विभिन्न विषयों पर शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया।

समापन सत्र

(द्वितीय दिवस): 20.03.2024

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से 'बेसिक इंडियन सोशल इंस्टीट्यूशन: कंटीन्यूटी एंड चेंज' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन हुआ। दो दिवसीय संगोष्ठी के कुल छः सत्रों में 250 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। समापन सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रजनीकांत पांडेय ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में आईपीएस श्रीमती निहारिका शर्मा एवं मुख्य वक्ता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के डीन स्कूल ऑफ सोशल साइंस प्रो. मनीष कुमार वर्मा उपस्थित रहे।
कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि आईपीएस श्रीमती निहारिका शर्मा ने कहा कि जाति सदियों से चली आ रही बड़ी आधारभूत सामाजिक संस्था है। उन्होंने एविडेंस एक्ट तथा इंडियन पीनल कोड में बदलाव को रेखांकित किया और भारतीय नागरिक सुरक्षा अधिनियम तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम पर विस्तार से चर्चा किया।
मुख्य वक्ता प्रो. मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है, जहां अन्य राष्ट्र मंदी के दौर से गुजर रहे हैं वही भारतीय जीडीपी में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्तमान संक्रमण के दौर में हम आधारभूत भारतीय मूल्यों को खोते जा रहे हैं। समाज में अधिशेष जरूरतों के साथ साथ अधिशेष उपभोग भी बढ़ गया है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्तावादी समाज का निर्माण हुआ है। एक तरफ हम तेजी से आधुनिकता की तरफ बढ़ते जा रहे हैं तो साथ ही साथ परम्परा को भी अपनाए हुए है। बदलते भारत में निरंतरता के साथ परिवर्तन आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चर्चा करते हुए प्रो. वर्मा ने कहा कि शिक्षा हमारा मौलिक अधिकार है। शिक्षा के साथ साथ समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जिम्मेदारियों को भी समझने की आवश्यकता है।
कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रजनीकांत पांडेय ने भारत का बदलाव शैक्षणिक संस्थानों से होगा। सामाजिक परिवर्तनों में हमें अपने स्थान को समझना होगा। वर्ल्ड ऑर्डर में बदलाव तकनीकी में परिवर्तन के साथ होता है, जिसका प्रभाव मानवीय सम्बन्धों पर भी दिखाई देता है। वर्तमान समाज में सबसे बड़ा संकट विश्वसनीयता का है। आभासी दुनिया ने सामाजिक संस्थाओं पर दुष्प्रभाव डाला है।
कार्यक्रम में अतिथियों का परिचय तथा स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग द्विवेदी ने किया।
राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक तथा आयोजन सचिव प्रो. सुभी धुसिया ने संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों का उल्लेख करते हुए दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।
कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश प्रियदर्शी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीष कुमार पांडेय ने किया। इस अवसर पर प्रो. संगीता पांडेय, डा. पवन कुमार, दीपेन्द्र मोहन सिंह सहित भारत के आधा दर्जन से अधिक राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों महाविद्यालयों से शिक्षक, शोधार्थी तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

विशेष
आईसीएसएसआर नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के कुल 06 तकनीकी सत्रों में असम, मेघालय, राजस्थान, बिहार, दिल्ली समेत भारत के अनेक राज्यों से 120 से अधिक प्रतिभागियों ने आधारभूत सामाजिक संस्थाओं के विभिन्न आयामों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों की सुविधा के लिए एक ऑनलाइन सत्र भी आयोजित किया गया।

सामाजिक परिवर्तन में शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. रजनीकांत

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से बेसिक इंडियन सोशल इंस्टीट्यूशनः कंटीन्यूटी एंड चेंज्ड विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन हुआ। दो दिवसीय संगोष्ठी के कुल छः सत्रों में 250 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। समापन सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रजनीकांत पांडेय ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में आईपीएस निहारिका शर्मा एवं मुख्य वक्ता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के डीन स्कूल ऑफ सोशल साइंस प्रो. मनीष कुमार वर्मा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि निहारिका शर्मा ने कहा कि जाति सदियों से चली आ रही आधारभूत सामाजिक संस्था है। उन्होंने एविडेंस एक्ट तथा इंडियन पीनल कोड में बदलाव को रेखांकित किया और भारतीय नागरिक सुरक्षा अधिनियम तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम पर विस्तार से वर्चा किया। कानून संस्था में बदलाव से समाज में परिवर्तन होगा। मुख्य वक्ता प्रो. मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है, जहां अन्य राष्ट्र मंदी के दौर से गुजर रहे हैं वहीं भारतीय जीडीपी में लगातार वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की वर्चा करते हुए प्रो. वर्मा ने कहा कि शिक्षा हमारा मौलिक अधिकार है। शिक्षा के साथ साथ समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जिम्मेदारियों को भी समझने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रजनीकांत पांडेय ने भारत का बदलाव शैक्षणिक संस्थानों से होगा। सामाजिक परिवर्तनों में हमें अपने स्थान को समझना होगा। कार्यक्रम में अतिथियों का परिचय तथा स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग द्विवेदी ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक तथा आयोजन सचिव प्रो. सुधी घुरिया ने संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों का उल्लेख करते हुए दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

भारत के आधा दर्जन से अधिक राज्यों के प्रतिभागी हुए शामिल

आईसीएसएसआर नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के कुल 06 तकनीकी सत्रों में असम, मेघालय, राजस्थान, बिहार, दिल्ली समेत भारत के अनेक राज्यों से 120 से अधिक प्रतिभागियों ने आधारभूत सामाजिक संस्थाओं के विभिन्न आयामों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों की सुविधा के लिए एक ऑनलाइन सत्र भी आयोजित किया गया।

संगोष्ठी के समापन सत्र में बोलतीं मुख्य अतिथि निहारिका शर्मा। संवाद

सामाजिक परिवर्तन में होगी शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका

संवाद न्यूज एजेंसी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर बोल रहीं थीं आईपीएस निहारिका शर्मा

गोरखपुर। आईपीएस निहारिका शर्मा ने कहा कि जाति सदियों से चली आ रही आधारभूत सामाजिक संस्था है। उन्होंने एविडेंस एक्ट तथा इंडियन पीनल कोड में बदलाव को रेखांकित किया और भारतीय नागरिक सुरक्षा अधिनियम तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि कानून संस्था में बदलाव से समाज में परिवर्तन होगा। भारत का बदलाव शैक्षणिक संस्थानों से होगा।

वे दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की ओर से आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से 'बेसिक इंडियन सोशल इंस्टीट्यूशनः कंटीन्यूटी एंड चेंज' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहीं थीं। मुख्य वक्ता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के डीन स्कूल ऑफ सोशल साईंस प्रो. मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है, जहां अन्य राष्ट्र मंदी के दौर से गुजर रहे हैं। वहीं, भारतीय जीडीपी में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्तमान संक्रमण के दौर में हम आधारभूत भारतीय मूल्यों को खोते जा रहे हैं। शिक्षा के साथ समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जिम्मेदारियों को भी समझने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रजनीकांत पांडेय ने कहा कि सामाजिक परिवर्तनों में हमें अपने स्थान को समझना होगा।